

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्री सुदर्शन संहितायां
॥ श्री अमृतसङ्गीरनस्तोत्रम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ श्री अमृतसंजीवनस्तोत्रम् ॥

अथापरमहं रक्ष्येहमृतसंजीवनं सुरम्।
यस्यानुष्ठानमात्रेण मृत्युर्दूरात्पलायते ॥ 1 ॥

असाध्याः कष्टसाध्याश्च महारोगा भयङ्कराः।
शीघ्रं नश्यन्ति पठनादस्यायुश्च प्रवर्धते ॥ 2 ॥

शाकिनीडाकिनीदोषाः कुदृष्टिग्रहशक्रजाः।
प्रेतरेतालयक्षोत्था बाधा नश्यन्ति चाखिलाः ॥ 3 ॥

दुरितानि समस्तानि नानाजन्मोद्भूतानि च।
संसर्गजरिकाराणि विलीयन्तेहस्य पठतः ॥ 4 ॥

सर्वोपद्रवनाशाय सर्वबाधाप्रशान्तये।
आयुः प्रवृद्धये चैतत् स्तोत्रं परममद्भुतम् ॥ 5 ॥

बालग्रहाभिभूतानां बालानां सुखदायकम्।
सर्वारिष्टहरं चैतद्वलपुष्टिकरं परम् ॥ 6 ॥

बालानां जीवनायैतत् स्तोत्रं दिव्यं सुधोपमम्।
मृतरत्नसंहरणं चिरंजीवित्रकारकम् ॥ 7 ॥

महारोगाभिभूतानां भयव्याकुलिताम्नानाम्।
सर्वाधिर्याधिहरणं भयघ्नमृतोपमम् ॥ 8 ॥

अन्नमृत्युश्चापमृत्युः पाठादस्य प्रणश्यति।
जलाग्निरिषशम्भारिनथिशृङ्गिभयं तथा ॥ 9 ॥

গৰ্ভরক্ষাকরং স্ত্রীণাং বালানাং জীরনপ্রদম্।
মহারোগহরং নৃণামল্লমৃত্যুহরং পরম্ ॥ 10 ॥

বালা বৃদ্ধাশ্চ तरुणा नरा नार्यश्च दुःखिताः।
भरन्ति सुखिनः पाठादस्य लोके चिरायुषः ॥ 11 ॥

अस्मात्परतरं नास्ति जीरनोपाय ऐहिकः।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन पाठमस्य समाचरेत् ॥ 12 ॥

अयुतारूढिकं राथ सहस्रारूढिकं तथा।
तदर्धं वा तदर्धं वा पठेदेतच्च भक्तितः ॥ 13 ॥

कलशे रिषुमारुध्य दीपं प्रज्व्राल्य यत्नतः।
सायं प्रातश्च रिधिरत्स्तोत्रमेतत्पठेत्सुधीः ॥ 14 ॥

सर्पिषा हरिषा राहपि संयारेनाथ भक्तितः।
दशांशमानतो होमं कुर्यात्सर्वार्थसिद्धये ॥ 15 ॥

नमो नमो रिश्वरिभारनाथ
नमो नमो लोकसुखप्रदाय।
नमो नमो रिश्वरसृजेश्वराय
नमो नमो मुक्तिररप्रदाय ॥ 16 ॥

नमो नमस्तेहथिललोकपाय
नमो नमस्तेहथिलकामदाय।
नमो नमस्तेहथिलकारणाय
नमो नमस्तेहथिलरम्भकाय ॥ 17 ॥

नमो नमस्ते सकलार्तिहर्त्रे
नमो नमस्ते रिरुजप्रकर्त्रे।

নমো নমস্তেহখিলরিশ্বধর্মে

নমো নমস্তেহখিললোকভর্মে ॥ 18 ॥

সৃষ্টং দেব চরাচরং জগদিদং ব্রহ্মস্বরূপেণ তে

সর্বং তৎপরিপাল্যতে জগদিদং রিষুস্বরূপেণ তে।

রিশ্বং সংহ্রিয়তে তদের নিখিলং রুদ্রস্বরূপেণ তে

সংসিচ্যামৃতশীকরৈর্হর মহারিষ্টং চিরং জীরয ॥ 19 ॥

যো ধন্বন্তরিসঞ্জয়া নিগদিতঃ ক্ষীরাক্কিতো নিঃসূতো

হস্তাভ্যাং জনজীরনায কলশং পীযুষপূর্ণং দধৎ।

আয়ুর্বেদমরীরচজ্জনরুজাং নাশায স ৎরং মুদা

সংসিচ্যামৃতশীকরৈর্হর মহারিষ্টং চিরং জীরয ॥ 20 ॥

স্ত্রীরূপং ররভূষণাংবরধরং ত্রৈলোক্যসংমোহনং

কৃৎরা পায়যতি স্ম যঃ সুরগণাল্পীযুষমতু্যত্তমম্।

চক্রে দৈত্যগণাল্পুধারিরহিতান্ সংমোহ্য স ৎরং মুদা

সংসিচ্যামৃতশীকরৈর্হর মহারিষ্টং চিরঞ্জীরয ॥ 21 ॥

চাম্বুষোদধিসংপ্লারভূরেদপ ঝাষাকৃতে।

সিঞ্চ সিঞ্চামৃতকণৈশ্চিরং জীরয জীরয ॥ 22 ॥

পৃষ্ঠমন্দরনির্ঘূর্ণনিদ্রাক্ষ কমঠাকৃতে।

সিঞ্চ সিঞ্চামৃতকণৈশ্চিরং জীরয জীরয ॥ 23 ॥

যাঞ্চাছলবলিত্রাসমুক্তনির্জর রামন।

সিঞ্চ সিঞ্চামৃতকণৈশ্চিরং জীরয জীরয ॥ 24 ॥

ধরোদ্ধারহিরণ্যাক্ষঘাতক্রোডাকৃতে প্রভো।

সিঞ্চ সিঞ্চামৃতকণৈশ্চিরং জীরয জীরয ॥ 25 ॥

ভক্তদ্রাসরিনাশাত্তচণ্ডের নূহরে রিভো।
সিঞ্চ সিঞ্চামৃতকণৈশ্চিরং জীরয জীরয ॥ ২৬ ॥

ক্ষত্রিয়ারণ্যসঙ্কেদকুঠারকর রৈণুক।
সিঞ্চ সিঞ্চামৃতকণৈশ্চিরং জীরয জীরয ॥ ২৭ ॥

রক্ষো রাজপ্রতাপাক্লিশোষণাশুগ রাঘর।
সিঞ্চ সিঞ্চামৃতকণৈশ্চিরং জীরয জীরয ॥ ২৮ ॥

ভূভারাসুরসন্দোহকালাগ্নে রুঞ্চিণীপতে।
সিঞ্চ সিঞ্চামৃতকণৈশ্চিরং জীরয জীরয ॥ ২৯ ॥

বেদমার্গরতানর্হরিভ্রান্ত্যে বুদ্ধরূপধৃক্।
সিঞ্চ সিঞ্চামৃতকণৈশ্চিরং জীরয জীরয ॥ ৩০ ॥

কলিরর্ণাশ্রমাস্পষ্টধর্মদ্বৈ কল্কি রূপভাক্।
সিঞ্চ সিঞ্চামৃতকণৈশ্চিরং জীরয জীরয ॥ ৩১ ॥

অসাধ্যাঃ কষ্টসাধ্যা যে মহারোগা ভয়ঙ্করাঃ।
ছিন্ধি তানাশু চক্রেণ চিরং জীরয জীরয ॥ ৩২ ॥

অল্পমৃত্যুং চাপমৃত্যুং মহোৎপাতানুপদ্ররান্।
ভিন্ধি ভিন্ধি গদাঘাতৈশ্চিরং জীরয জীরয ॥ ৩৩ ॥

অহং ন জানে কিমপি ত্বদন্য -
ৎসমাশ্রযে নাথ পদাম্বুজং তে।
কুরুত্ব তদ্যন্ননসীপ্লিতং তে
সুকর্মণা কেন সমক্ষমীযাম্ ॥ ৩৪ ॥

ত্বমের তাতো জননী ত্বমের
ত্বমের নাথশ্চ ত্বমের বন্ধুঃ।

বিদ্যাধনাগারকুলং ত্রমের
ত্রমের সর্ং মম দেবদেব ॥ 35 ॥

ন মেহপরাধং প্রলিলোকয প্রভো -
হপরাধসিক্শোশ্চ দযানিধিস্ত্বম্।
তাতেন দুষ্টোহপি সুতঃ সুরক্ষ্যতে
দযালুতা তেহরতু সর্দাহস্মান্ ॥ 36 ॥

অহহ রিস্মর নাথ ন মাং সদা
করণযা নিজযা পরিপূরিতঃ।
ভুরি ভরান্ যদি মে নহি রক্ষকঃ
কথমহো মম জীরনমত্র রৈ ॥ 37 ॥

দহ দহ কৃপযা ত্রং র্যাধিজালং রিশালং
হর হর কররালং চাল্লমৃত্যোঃ করালম্।
নিজজনপরিপালং ত্রাং ভজে ভারযালং
কুরু কুরু বহুকালং জীরিতং মে সদাহলম্ ॥ 38 ॥

ন যত্র ধর্মাচরণং ন দানং
ব্রতং ন যাগো ন চ রিষুচর্চা।
ন পিতৃগোরিপ্রররামরার্চা
স্বল্লাযুষস্তত্র জনা ভরন্তি ॥ 39 ॥

ক্লীং শ্রীং ক্লীং শ্রীং নমো ভগবতে জনার্দনায
সকলদুরিতানি নাশয নাশয
ক্ষৌং আমারোগ্যং কুরু কুরু
হ্রীং দীর্ঘমাযুর্দেহি দেহি স্বাহা।

अस्य धारणतो जापादल्लमृत्युः प्रशाम्यति ।
गर्भरक्षाकरं स्त्रीणां बालानां जीर्णं परम् ॥ 40 ॥

शतं पञ्चाशतं शक्त्याहथरा पञ्चाधिरिंशतिम् ।
पुस्तकानां द्विजेभ्यस्तु दद्याद्दीर्घायुषाप्तये ॥ 41 ॥

डूर्जपत्रे रिलिखेदं कर्णे वा बाहूमूलके ।
संधारयेदगर्भरक्षा बालरक्षा च जायते ॥ 42 ॥

सर्गे रोगा रिनश्यान्ति सर्वा बाधाः प्रशाम्यति ।
कुदृष्टिजं भयं नश्येत्तथा प्रेतादिजं भयम् ॥ 43 ॥

मया कथितमेतन्नेहमृतसंकीर्णं परम् ।
अल्लमृत्युहरं सुत्रं मृतरंसत्तुनाशनम् ॥ 44 ॥

॥ इति श्री अमृतसंकीर्णसुत्रं समाप्तम् ॥